वाद्य और उनके प्रकार

आदि काल से भारतीय संगीत में वाद्यों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। अजन्ता, एलोरा और एलिफेन्टा की चित्रकारी, मोहनजोदड़ो के भग्नावशेष तथा आदि कालीन ग्रन्थ सामवेद इसके प्रमाण स्वरूप हैं। पाश्चात्य देशों की तुलना में भारतीय वाद्य उतने विकसित नहीं हुये हैं। इसका कारण यह है कि पाश्चात्य संगीत जितना बल वाद्यों पर देता है उतना भारतीय संगीत नहीं। 'संगीत रत्नाकर' के आधार पर भारतीय वाद्य चार प्रमुख भागों में विभाजित किये जा सकते हैं- तत्, सुषिर, अवनद्ध और घन।

'वाद्यतन्त्री ततं वाद्यं सुषिरं मतम्।
चर्मावनद्धवदनमवनद्धं तु वाद्यते।
घनोमूर्तिः साऽभिधाताद्ध्यते यत्रतद्घनम।।।

-संगीत रत्नाकर

तत् वाद्य-

जिन वाद्यों में ताँत अथवा तार से ध्वनि उत्पन्न होती है वे वाद्य तत् वाद्य कहलाते हैं, जैसे-तम्बूरा सितार, गिटार, सारंगी, वाइलिन इत्यादि। वाद्यों की जननी वीणा मानी जाती है। इन वाद्यों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

(१) जो अंगुलियों, मिजराब अथवा जवा द्वारा बजाये जाते हैं, जैसे- सितार, वीणा, तम्बूरा, सरोद इत्यादि।

(२) जो गज अथवा कमानी द्वारा बजाये जाते हैं, जैसे- बेला, सारंगी, दिलरुबा आदि। इन्हें वितत् वाद्य भी कहते हैं।

(३) तीसरा प्रकार उन वाद्यों का है जिनमें लकड़ी के आघात द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं, जैसे प्यानों।

सुषिर वाद्य-

जिन वाद्यों में स्वरोत्पत्ति वायु द्वारा होती है, वे सुषिर वाद्य कहलाते हैं, जैसे-

Scanned with CamScanner

हारमोनियम, शहनाई, क्लैरिनट, बाँसुरी, शंख, तुरही इत्यादि। इन वाद्यों को भी हम दो भागों में बाँट सकते हैं-

(अ) पहला प्रकार उन वाद्यों का है जिनमें पतली पत्ती अथवा रीड द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं, जैसे- हारमोनियम, शहनाई आदि।

(ब) दूसरा प्रकार उन वाद्यों का है जिनमें छिद्र द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं, जैसे बाँसुरी, बिगुल, शंख आदि।

अवनद्ध वाद्य-

भारतीय वाद्यों का तीसरा प्रकार अवनद्ध वाद्यों का है। इनमें चमड़े अथवा खाल को आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है, जैसे- तबला, ढोलक, डमरू, नगाड़ा, भेरी आदि। इनका प्रयोग ताल देने के लिये होता है, क्योंकि इनमें एक ही स्वर निकलता रहता है, इसलिये इन वाद्यों में स्वर की अपेक्षा लय की अधिक प्रधानता रहती है जैसे- तबला, पखावज, ढोलक आदि। आजकल तबले का प्रयोग स्वतन्त्र वादन (Solo Performance) में तथा कभी-कभी तबला-तरंग में भी होने लगा है।

घन वाद्य-

वाद्यों का अन्तिम प्रकार घन वाद्य है। जिनमें किसी धातु अथवा लकड़ी से स्वरोत्पत्ति होती है, जैसे मंजीरा, झाँझ, करताल, जलतरंग एवम् काष्ठ-तरंग इत्यादि।

वाद्यों का विभाजन आकार, उपयोग और उनके बजाने के ढंग पर आधारित है। विभाजन की दृष्टि से विद्वानों के मुख्य तीन मत पाये जाते हैं। प्रथम मतानुसार, सम्पूर्ण वाद्यों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है-तत, घन और सुषिर। इसमें अवनद्ध अर्थात चमड़े के वाद्यों को चार भागों में विभक्त किया गया है। इसके भी दो प्रकार हैं- पहले प्रकार में तत, घन, अवनद्ध और सुषिर भागों में (जिसे हम पीछे समझा चुके हैं) और दूसरे प्रकार में तत, वितत, घन और सुषिर वर्गों में बाँटा गया है। इस प्रकार इस विभाजन में अवनद्ध को घन में सम्मिलित कर लेते हैं और वितत को तत से पृथक् कर देते हैं। मिजराब अथवा जवा से बजाये जाने वाले वाद्य तत् तथा छड़ी अथवा कमानी से बजाये जाने वाले वाद्य वितत् कहलाते हैं। दोनों में समता यह है कि दोनों प्रकार के वाद्यों में तार अथवा तांत द्वारा स्वरोत्पत्ति होती है, किन्तु साधन बदल

Scanned with CamScanner

जाता है। अन्तिम मतानुसार कुछ वाद्यों को पाँच भागों में विभाजित किया गया है- तत, वितत, अवनद्ध, घन और सुषिर।

Scanned with CamScanner

वाद्ययंत्र परिचय, वाद्यों के प्रकार

भारतीय वाद्यों को चार श्रेणियों में बाँटा गया है—१. तत वाद्य, २. सुषिर वाद्य, ३. अवनद्ध वाद्य और ४. घन वाद्य।

तत वाद्य या तंतु वाद्य

इस श्रेणी के वाद्यों में तारों के द्वारा स्वरों की उत्पत्ति होती है। इनके भी दो प्रकार हैं—१. तत वाद्य, २. वितत वाद्य। तत वाद्यों की श्रेणी में तार के वे साज़ आते हैं, जिन्हें मिज़राब या अन्य किसी वस्तु की टंकोर देकर बजाते हैं; जैसे-'वीणा', 'सितार', 'सरोद', 'तानपूरा', 'इकतारा', 'दुतारा' इत्यादि। दूसरी वितत वाद्यों की श्रेणी में गज़ की सहायता से बजनेवाले साज़ आते हैं; जैसे—'इसराज', 'सारंगी', 'वॉयलिन' इत्यादि।

सुषिर वाद्य

इस श्रेणी में फूँक या हवा से बजनेवाले वाद्य आते हैं; जैसे—बाँसुरी, हारमोनियम, क्लारनेट, शहनाई, बीन, शंख इत्यादि।

अवनद्ध वाद्य

इस श्रेणी में चमड़े से मढ़े हुए ताल-वाद्य आते हैं; जैसे—मृदंग, तबला, ढोलक, खंजरी, नगाड़ा, डमरू, ढोल इत्यादि।

घन वाद्य

इस श्रेणी के वाद्यों में चोट या आघात से स्वर उत्पन्न होते हैं; जैसे—जल तरंग, मँजीरा, झाँझ, करताल, घंटातरंग, पियानो इत्यादि।

Scanned with CamScanner